पाठ - दोहा

- बिहारी

प्रत्येक - 1, 2 अंक

① पीले वस्त्र धारण किए श्रीकृष्ण का रूप-सौंदर्य कैसा प्रतीत हो रहा है?

उ० - श्रीकृष्ण सांवले शरीर पर पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। वे इस वेश में दिव्य आभा प्रदान करते हुए इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं मानो नीलमणि पर्वत पर प्रातःकालीन धूप पड़ रही हो।

---

② श्रीकृष्ण के शरीर की तुलना नीलमणि पर्वत से क्यों की गई है?

उ० - श्रीकृष्ण का सांवला शरीर नीली आभा दिखलाता है। नीलमणि पर्वत भी नीले रंग का होता है इसलिए श्रीकृष्ण की तुलना नीलमणि पर्वत से की गई है।

---

③ सोहत ओढ़ें ..... परयो प्रभात ॥ का शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उ० - सखी नायक की नील छवि पर पीत पट की शोभा का वर्णन करके नायिका के मन में अनुराग उत्पन्न करना चाहती है।

- सरस, मधुर और लालित्य पूर्ण ब्रज भाषा का प्रयोग है।
- शृंगार रस का प्रयोग है।
- दोहा छंद का प्रयोग है।
- अनुप्रास अलंकार की छटा सर्वत्र विद्यमान है
- 'मनो नीलमनि-सैल पर' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

---

④ साँप, मोर, मृग और बाघ किस कारण इकट्ठे निवास कर रहे हैं?

उ० - साँप और मोर व मृग और बाघ एक-दूसरे के स्वाभाविक रूप से शत्रु हैं, मोर साँप को देखते ही मार डालता है व बाघ मृग को अपना भोजन बना लेता है, लेकिन अत्यधिक गर्मी पड़ने के कारण सभी आपसी शत्रुता को भूलकर गरमी से तड़क

पाने की कोशिश कर रहे हैं, इसलिए सभी इकट्ठे रह रहे हैं।

(5) जेठ मास की भीषण गर्मी में संसार तपोवन कैसे बन गया?

उ०- ग्रीष्म ऋतु में भीषण गर्मी पड़ने के कारण सभी जीव-जंतु आपसी शत्रुता भूलकर एक-साथ जंगल में रह रहे हैं। प्रचंड गर्मी पड़ रही है। चारों ओर लू का प्रकोप है। मोर और साँप व मृग तथा बाघ साथ-साथ निवास कर रहे हैं। इसलिए कवि को धरती तपोवन के समान प्रतीत होती है। तपोवन में तपस्वी आपसी स्पर्धा और शत्रुता को भूलकर तपस्या करते हैं वैसे ही सभी जीव-जंतु गर्मी के कारण अपनी शत्रुता भूल बैठे हैं।

(6) 'बतरस' शब्द से क्या तात्पर्य है?

उ०- 'बतरस' शब्द का अर्थ है-बातें करने का आनंद। गोपियों को बतरस करने का लालच है। वे चाहती हैं श्रीकृष्ण उनसे देर तक बातें करते रहें। इस प्रकार उन्हें श्रीकृष्ण के समीप रहने का अवसर भी मिल जाएगा।

(7) "सौंह करैं भौहनु हँसै" का आशय स्पष्ट करें-

उ०- जब श्रीकृष्ण गोपी से अपनी मुरली वापस माँगते हैं तो गोपी कसम खाकर कहती है कि उसने मुरली नहीं चुराई। साथ ही वह अपनी भौंहों से हँसकर यह भी बता देती है कि यह शरारत उसी ने की है। नायिका ऐसा व्यवहार इसलिए करती है ताकि कृष्ण उससे बातें करें। इसी बहाने उसके समीप आएँ।

(8) नायक नायिका से किस प्रकार प्रणाम निवेदन करता है? तथा नायिका की क्या प्रतिक्रिया होती है?

उ०- सर्वप्रथम नायक नायिका को संकेत से प्रणय निवेदन करता है, नायिका पहले इनकार करती है। नायक उसके मना करने के ढंग पर प्रसन्न हो जाता है। नायिका खीझ जाना, दोनों के नयनों का मिलना। अंततः स्वीकृति का आदान-प्रदान हो जाता है। दोनों के चेहरे प्रसन्नता से खिल जाते हैं नायिका लजा जाती है।

(9) नायक, नायिका नयनों से बातें क्यों करते हैं?
उ०- नायक के मन में नायिका से बातें करने व अपना प्रेम संदेश देने की भावना प्रबल हो रही थी। सभी लोगों की उपस्थिति में नायक नायिका से बात नहीं कर पा रहा था। अतः दोनों को नेत्रों से बातें करने की आवश्यकता पड़ती है।

(10) दूसरों को शीतलता देने वाली छाया स्वयं छाँव ढूंढ़ने के लिए क्यों विवश है?
उ०- जेठ मास की दोपहरी में भीषण गर्मी पड़ रही है। कहीं भी छाया का नामो निशान नहीं है। यहाँ तक कि छाया को छाँव की आवश्यकता महसूस हो रही है। ऐसा लगता है कि वह गरमी से बचने के लिए घने जंगलों में जाकर छिप गई हो या शरीर रूपी भवन में प्रवेश कर गई हो, मानो उसे भी गर्मी से बचाव करना है।

(11) कवि ने किस ऋतु का वर्णन किया है? इस ऋतु में छाया क्यों छिप जाती है?
उ०- कवि ने जेठ माह की ग्रीष्म ऋतु का वर्णन किया है। इस ऋतु में छाया भी गरमी से बचने के लिए जंगल में छिप जाती है या भवन रूपी शरीर में बैठ जाती है।

(12) नायिका कागज़ पर संदेश क्यों नहीं लिख पाती?

उ० – नायिका कागज़ पर संदेश लिखना चाहती है तो अम्बु (आँसू) स्वेद (पसीना) और कंपन (कँपकँपी) के कारण वह ऐसा नहीं कर पाती। पत्र लिखते ही उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। पसीने छूटने लगते हैं व हाथ काँपने लग जाते हैं जिससे वह लिख नहीं पाती।

(13) नायिका को संदेश कहकर भेजने में लज्जा क्यों अनुभव होती है? वह नायक को क्या संदेश भेजना चाहती है?

उ० – नायिका को संदेशवाहक के द्वारा संदेश भेजने पर उसे प्रेम भरे शब्द कहने में ही लज्जा का अनुभव होता है, जिससे वह कुछ कह नहीं पाती। नायिका यह संदेश भेजना चाहती है कि वह अपने हृदय से ही मेरे हृदय की दशा जान ले क्योंकि प्रेमीजन एक-दूसरे के हृदय की बात जानते हैं।

(14) 'द्विजराज-कुल' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ?

उ० – 'द्विजराज-कुल' के दो अर्थ हैं – ब्राह्मण कुल और चंद्रमा कुल। कृष्ण के प्रसंग में उन्होंने कहा कि आप चंद्रवंश में पैदा हुए और अपनी इच्छा से ब्रज प्रदेश में आ गए। कृष्ण आप मेरे पिता केशव-राय तुल्य हैं। आप मेरे कष्ट दूर करें। पिता केशवराय के प्रसंग में ब्राह्मण कुल का अर्थ लिया गया है।

(15) 'केसव केसवराई' में केसव का अर्थ है – केशव अर्थात कृष्ण व 'केसवराइ' शब्द का अर्थ है – केशवराय अर्थात बिहारी के पिता। आपने केशव और केशवराय दोनों का ही अपना

संरक्षक मानकर दुख, क्लेश दूर करने की पुकार की है।

(16) ढोंगी मनुष्य किन-किन बाह्य आडंबरों का वर्णन करते हैं?

उ- ढोंगी मनुष्य बड़े-बड़े तिलक लगाकर राम-नाम का छापा धारण कर सारे शरीर पर कई प्रकार के चिह्न बनवाकर दूसरों को दिखावा करते हैं कि उससे ईश्वर की प्राप्ति होगी।

(17) कवि के अनुसार ईश्वर प्राप्ति कैसे होती है? 'मन काँचे' शब्द किनके लिए प्रयुक्त किया गया है?

उ- कवि के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति हृदय में सच्ची लगन से होती है। इसके लिए किसी बाह्य आडंबर की आवश्यकता नहीं होती। 'मन काँचे' शब्द कच्चे मन वालों के लिए प्रयुक्त किया गया है, जिसके मन में प्रभु के प्रति सच्ची आस्था व भावना नहीं होती जो बाह्य आडंबरों का दिखावा देते हैं।

(18) बिहारी के दोहों से क्या संदेश मिलता है?

उ- बिहारी के दोहे हमें संदेश देते हैं कि हमें मिल-जुलकर रहना चाहिए। आपसी वैर-भाव नहीं रखना चाहिए। जैसे गर्मी में पशु-पक्षी तक गर्मी के बचाव सोचने में आपसी शत्रुता भूल जाते हैं। जिसप्रकार प्रेमीजन, एक-दूसरे के हृदय की बात जानते हैं वैसे ही ईश्वर के सामने हमें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वे हमारे मन की व्यथा जानते हैं हमें तो बस उनसे निःस्वार्थ सच्ची प्रीति रखनी चाहिए। ईश्वर प्राप्ति के लिए बाह्य आडंबरों-माला, जाप, ढोंग तिलक की आवश्यकता नहीं होती

केवल सच्ची भक्ति से ही ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है।

(19) बिहारी के दोहों का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उ० - बिहारी रीतिकाल के सुप्रसिद्ध कवि थे। अपने काव्य में इन्होंने शृंगार और भक्ति के दोहों को स्थान दिया। प्रस्तुत दोहों में कवि ने भगवान श्रीकृष्ण के सांवले सलोने रूप का मनोहारी वर्णन किया है। गर्मी ने वन को ऐसा तपोवन बना दिया है कि हिरन, बाघ, सांप, मोर जो स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के शत्रु होते हैं, वे भी इकट्ठे बैठे हैं। गोपियाँ श्रीकृष्ण से बातें करने के लालच में उनकी बाँसुरी छिपा देती हैं। नायक व नायिका का सगे-संबंधियों से घिरे होने पर नैनों से वार्तालाप का बखूबी चित्रण किया गया है। जेठ मास की दुपहरी की भीषणता का वर्णन किया गया है। वियोगी नायिका की असमंजसपूर्ण स्थिति का मार्मिक वर्णन है। कवि चाहता है कि भगवान कृष्ण व उसके पिता दोनों उसके सभी कष्ट दूर करें। बाहरी ढोंग, आडंबर दिखावे की अपेक्षा मन में बसे प्रभु की भक्ति द्वारा कार्य पूर्ण होने का वर्णन किया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विभिन्न विचारों से मिलकर बने ये बिहारी के दोहे वास्तव में 'गागर में सागर' जैसा महत्व रखते हैं।

एक अंक -

(20) कृष्ण का शरीर कैसा है? उसके लिए कवि ने किन शब्दों का प्रयोग किया है?

उ० - कृष्ण का शरीर साँवला और सुंदर है। इन्होंने साँवले रंग के लिए 'स्याम' शब्द का प्रयोग किया है। सुंदर के लिए 'सलौने' शब्द का व्यवहार किया है।